।। हमीं से है दिन बहुरंगी भी ।।

जीत लेंगे हम -
यह बाज़ी भी ।
प्यादे -
राजा को मात देंगे ।
दीये -
सूरज को रात देंगे ।
लायेंगे हम -
पौ गुलाबी भी ।
गुलशन -
बहार के ऋणी होंगे ।
गुलशनों में -
शूल नहीं होंगे ।
हमसे है बयार -
सुहानी भी ।
उनकी हर चाल -
शकुनि चाल है ।
शकुनि जाल नहीं -
मकड़जाल है ।
दुम हिला , करें न -
हम हाँ जी भी ।
आँसू नहीं -
होंठ मुस्कान है ।
दिल बाग़ है -
न बियावान है ।
हमीं से हैं दिन -
बहुरंगी भी ।

+
अशोक आनन +
मक्सी

स्वागत है नववर्ष .

आया मंगलमय नववर्ष ।
नित नव नूतन कुसुम सुहाए ,
नव पल्लव तरुवर बहु छाए ,
हृदय अती उत्कर्ष ।
आया मंगलमय नववर्ष ।।
पश्चिम कलरव मंगल गाए ,
खग मृग आपसु बैर भुलाए ,
विचरत हो अति हर्ष ।
आया मंगलमय नववर्ष ।।
पुरबि बयार बधाई बजाए ,
कोयल मधुरी तान सुनाए ,
स्वागत करत सहर्ष ।
आया मंगलमय नववर्ष ।।
घर घर उत्सव मंगल छाए ,
विधि हरि हर सब लोग मनाए ,
स्वागत है नववर्ष ।
आया मंगलमय नववर्ष ।।

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
आरा, भोजपुर, बिहार

एक ही चांद

खिली हुई चांदनी में
खुली हुई छत पर
लेटा हुआ आदमी।

तन की विश्रांति से
मन में निःश्वास है,
'ओह! आज चांद कितना उदास है। '
पर चांद? चांद तो प्रतिबिंब है
अपने ही अन्तर्मन का।

तभी तो दूर, नदी के तट पर
प्रेयसी की गोद में
लेटा हुआ प्रेमी
कह रहा है,
'देखो तो, आज चांद
कितना सुंदर लग रहा है। 'कृष्ण शिवपार्वती

विरार (पश्चिम)-महाराष्ट्र

क्षणिका

गैस की बढ़ती किल्लत देख
लकड़ी ने कहा,
'अब आया ऊँट
पहाड़ के नीचे... '
तभी तमतमाकर लाल
एलपीजी ने कहा,
वो आ गया शिवालिक..
चल हट...पीछे..! '
वक़्त की बात है
अपनी अपनी औकात है;
चाल चलते सभी..
कभी शह कभी मात है।
कोई ऊपर... कोई नीचे,
समय का पहिया यूँ घूम रहा
परिवर्तन प्रकृति का नियम है
गुस्से में न यूँ मुट्ठी भींचे..?!

- कृष्ण कुमार अजनबी

फिर सुबह आएगी...

रात की चादर चाहे जितनी गहरी हो,
अंधेरों की सांसें चाहे जितनी ठहरी हों,
थके हुए ख्वाबों की आँखों में चाहे
नींद भी रुठकर बैठी हो कहीं–
पर यकीन रखो...
फिर सुबह आएगी।

जब टूटते हौसलों की आवाज़
दिल में गूंजती है,
जब हर रास्ता जैसे
खुद ही खुद से मुंह मोड़ लेता है,
जब उम्मीद की लौ
हवा के झोंकों से कांपती है–
तब भी कहीं दूर, बहुत दूर,
रोशनी जन्म लेती है...
और धीरे-धीरे बढ़ती हुई
हम तक पहुंचती है।

ये रात बस एक इम्तिहान है,
थोड़ी सी ठहराव की कहानी है,
जिसमें दर्द की स्याही से
लिखे जाते हैं सबक–
कि गिरना अंत नहीं होता,
और थम जाना भी
हमारी फितरत नहीं।

देखो, उस क्षितिज के पार
एक हल्की सी रेखा उभर रही है,
वो सूरज की पहली सांस है,
जो कह रही है–
'तुम अकेले नहीं हो... '

पत्तों पर ठहरी ओस की बूंदें
फिर से चमक उठेंगी,
पंछियों की खामोश चोंचों में
फिर से गीत उतरेंगे,
और तुम्हारे दिल में
जो जमी है उदासी की परत–
वो भी पिघल जाएगी
धीरे-धीरे... चुपचाप।

तो थाम लो खुद को,
थोड़ा और ठहर जाओ,
ये रात जितनी भी लंबी हो–
उसका अंत तय है।
क्योंकि हर अंधेरा
किसी उजाले की तैयारी होता है...
हर टूटन
किसी नई शुरुआत की आहट होती है...

और ये जीवन–
ये कभी रुकता नहीं...
इसलिए...
आंखों में थोड़ा सा यकीन रखो,
दिल में एक छोटी सी उम्मीद जगाओ–
क्योंकि चाहे कुछ भी हो जाए...
फिर सुबह आएगी।

मुकेश कुमार बिस्सा
जैसलमेर

या देवी सर्वभूतेषु

जहां स्त्री वहां सृजन शक्ति
न सिर्फ जनन प्राण-शक्ति
संचालिका ऊर्जा प्रशक्ति
दैवीय मूर्ति प्रति भक्ति
ना प्रतीकों प्रति आसक्ति
दैविय मंत्रों की पंक्ति
समझे अर्थ गर व्यक्ति
बुद्धि निद्रा शांति स्तुति
तृष्णा दया चेतना स्मृति
संहार कर पशुत्व वृत्ति
क्रोध मद मोह मुक्ति
प्रतीकों की गढ़ें आकृति
प्रकट हो दैवीय पराशक्ति
अंधकार प्रकाश, पुरुष स्त्री
संतुलन हेतु रची सृष्टि
सर्व मंगल मांगल्ये दैव शक्ति।

नील मणि मेरठ -
मोबाइल नंबर - 9412708345

नन्ही सवारी

नन्हे-नन्हे दो बच्चे,
मोटर पर बैठे अच्छे।
आगे बैठा भैया प्यारा,
पीछे बैठा भाई न्यारा।
धीरे-धीरे चलती गाड़ी,
देखो कितनी प्यारी सवारी।
हँसते-हँसते जाएँ आगे,
मस्ती उनके संग ही भागे।
हवा लगे तो हँसी आए,
मोटर आगे बढ़ती जाए।
छोटे-छोटे मीठे सपने,
दोनों लगते कितने अपने।
मिलकर दोनों करें सवारी,
खुशियों की है यह पिटारी।
नन्ही दुनिया, नन्हे यार,
बचपन कितना है गुलज़ार।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

नन्ही गौरैया

गौरैया अब मेरे आंगन आती नहीं ,
अब वो आकर चहचहा ती भी नहीं ,
सुबह उठते ही उसका खिड़की पर आकर बैठना ,
ओर चहचहाना अब वो सुनाती भी नहीं ।

गौरैया का रोज छत पर आकर बैठना ,
फुदक फुदक कर ची ची करते रहना ,
एक दूसरे के ऊपर चोंच मारते रहना ,
अब वह कुछ भी दिखता नहीं ।

आंगन के पेड़ों की डालों पर उसका बैठना ,
अब कभी कभी दिख जाता है ,
उसके झुंड जैसे गायब हो गए ,
वह भी खामोश सी हो गई है ,
इसलिए घर आंगन में फुदकना भूल गई है ।

कमरे में लगे आईने पर बैठकर चोंच मारना,
ओर उसमें खुद को देखकर ,
जोर जोर से ची ची करना,
जैसे अपना चेहरा देखना भी भूल गई है ।

वो कमरों में लगी तस्वीरों के पीछे,
तिनका तिनका इकट्ठा कर चुपके से,
अपना घोंसला बनाना भी भूल गई है,
मेरी प्यारी गौरैया हमारा घर छोड़ गई है।

छतों पर उसके लिए रखा दाना पानी खाती थी,
सकोरे का दाना पानी खत्म हो गया तो,
कमरे में आकर चह चहाकर इशारा कर जाती थी,
मां समझ जाते थी,
छत पर दाना पानी रख आती थी ।

आज मेरी प्यारी गौरैया जैसे रूठ गई है,
हमारा घर ,द्वार, शहर सब छोड़ गई है,
नन्हीं गौरैया को वापस बुलाना है,
दाना पानी खिलाना है,
सीमेंट कॉन्क्रीट के जंगल की जगह,
शहर में हरियाली लाना है,
तभी मेरी नन्ही गौरैया आयेगी,
छत पर रखा दाना पानी खाएगी,
हा मेरी नन्ही गौरैया आयेगी
मेरी नन्ही गौरैया जरूर आएगी।

डॉ संजय कुमार मालवी आदर्श,इंदौर 130564-90764

' चल मेरे भाई, तेरे हाथ जोड़ता हूँ '

ऊँट किस करवट बैठेगा
या रहकर खड़ा ही अपना पासा फेंकेगा

मरते जा रहे हैं, ऊँट पर बैठे सेनापति
जंग का बदलता खाका दुश्मन देखेगा

लगे रहो मुन्ना भाई, ये जंग निराली है
शुरू की तुमने, हम तमाशा देखेगा

ताकत है तो खेलो , ताकत से फुटबॉल
मोहरा शतरंज का ये जाने किस खाने बैठेगा?

लड़ रहे हम सालों से, हमको लड़ना आता है
आफिस में बैठा- बैठा बस वो नित्य यों ही रेंकेगा

खोने को कुछ नहीं, कफ़न बाँधकर निकले हैं
शहादत होगी, आजादी का सूरज आने वाला देखेगा।

- कुमार दुष्यन्त,राम टेकरी, मन्दसौर मध्यप्रदेश

मेरी सिसकियाँ

मेरी सिसकियाँ भी अब
खामोशी में ढल जाती हैं,
जो बात जुबां कह न सके,
वो आँखों से निकल जाती हैं।
दिल के कोने में छिपे दर्द
धीरे-धीरे बोल उठते हैं,
रात की तन्हा चादर में
आँसू चुपके से ढोल उठते हैं।
मेरी सिसकियाँ सुनता कौन,
यहाँ सब अपने में खोए हैं,
भीड़ के इस शोर भरे जग में
हम फिर भी कितने रोए हैं।
कभी खुद से बातें करती हूँ,
कभी यादों में खो जाती हूँ,
अपने ही जज्बातों से
हर पल मैं टकराती हूँ।
मेरी सिसकियाँ शायद
किसी को सुनाई न दें,
पर इनकी हर धड़कन में
मेरे जीने की वजह छिपी रहे।

नेहा कुमारी

खामोशी के अपराधी

रातों में रोती बेटियाँ
और शहर की रोशनी
अपराधियों के स्वागत में चमकती है।

हमारे भीतर कितना अँधेरा बाकी है
कि सत्य की चीख
दीवारों से टकराकर लौट आती है,
और हम
बहरों की तरह खड़े रहते हैं।

उन्नाव, हाथरस, कठुआ
नाम बदलते हैं,
पर दरिंदों की हँसी नहीं बदलती।

हर बार देह घायल,
आत्मा कुचली जाती है,
और जुल्मों पर
जालिम सत्ता
चुप्पी की चादर डाल देती है।

भीड़
फूल लेकर नहीं आती,
संवेदनाएँ कुचलकर आती हैं,
अपनी चेतना का अंतिम संस्कार करती है,
और पाखंड के चरणों में
मानवता गिरवी रख आती है।

किस मिट्टी के बने हैं हम,
क्यों शर्म की राख ढोते हैं?

कब जागेगा यह समाज
जिसकी आँखों में
अब आँसू नहीं,
सिर्फ़ आदतें रह गई हैं?

दर्द
कोई शब्द नहीं,
हर पीड़िता की आत्मा में
जलता हुआ अंगार है,
जो भीतर-भीतर सुलगता हुआ
अंततः हमें
कटघरे में खड़ा कर देता है-

'कानून लिखे जाते रहे,
पर न्याय कब लिखा जाएगा?'

अब शब्द नहीं
घाव बोलेंगे।
और झूठे चेहरों से
नकाब उतरेंगे।

आज यह संकल्प नहीं,
निर्णय होगा-
अपराधी देवता नहीं बनेंगे,
और पीड़िताएँ
मौत की शरण नहीं लेंगी।

याद रखो
चुप्पी तटस्थ नहीं होती,
वह अपराध की सबसे सुरक्षित शरण होती है।
जब तक हम खड़े नहीं होंगे,
वह गिरती रहेंगी।

जागो...
क्योंकि यह सिर्फ़ उनका नहीं
हमारी आत्मा का प्रश्न है।

और अगर अब भी
हम नहीं जागे
तो इतिहास गवाह रहेगा-
कि इस बार
मानवता की हत्या
किसी दरिंदे ने नहीं,
हमारी
खामोशी ने की थी।

- धर्मेन्द्र कुमार धर्मी दौसा, राजस्थान

देश की जीवन रेखा

'ट्रेन स्टेशन पर है रुकी हुई,
मुसाफिरों का आदाब बजाती है।
मुसाफिरी करना हो तो,
आम आदमी को ट्रेन ही याद आती है '।

हमारे देश की जीवन रेखा है ये,
अनेकता में एकता का संदेश सुनाती है।
कर्म इसका है निश्चित बना हुआ,
लोगों को अपनी मंजिलों पर पहुंचाती है '।

ललित महालकरी इंदौर

डूंगर-डूंगर गूँजे गणगौर

गणगौर आवे रे, ढोल-मादल गूंजे,
भीलन रे नाच उठे, बन-बन गीत सूंझे।
गौरा माता पधार्या, महुआ तले धाम,
डूंगर-डूंगर गूँजे, थारो पावन नाम।
नदड़ी किनारे छोरियाँ, फूलां सूं साज,
घूंघट में हँसे, करे गीतां री आवाज।
मादल री थाप पे, थिरके रैण-भर,
बागड़ी बोल्या में, गावे सगला घर।
कांकरिया रा रस्ता, पग-पग राग जगावे,
जंगल री हरियाली, गौरा गुण गावै।
भीलड़ो मन रमे, अगनिया पास,
गणगौर री रात में, जागे आस-पास।
गौरा-शंकर देवो, सुख-धान रो दान,
धरती हँसे, भर जाए हर एक थान।
आवो रे मिलजुल, गावरीं में गाइए,
गणगौर री महिमा, पीढ़ी-पीढ़ी धोराइए।

अनुपमा पटवारी 'ख्याति' इंदौर, मध्य प्रदेश

नर और नारी

है नारी तेरा जीवन भी क्या है
कहीं आग का दरिया है
कहीं गहरे समुद्र का ठहरा पानी है
जब जीवन में तेरे हलचल होती है
कामपिपासा मनुष्य की प्रवृत्ति से
जब तू जाल में शिकार हो जाती है
मन की पीड़ा
जवलंत अगनी की तरह हो जाती है
ठहरा पानी समुद्र का
आंख का नीर बन नदिया की तरह
समुद्र से जा मिलता है
है नारी तू ही नर की जीवन दायिनी है
यही कामपिपासा की लिपसा नर
तेरा शोषण करता है
है नारी तू ही जग जननी है
नर को जन्म देकर तू
कभी आश्रित कभी अपाहिज बन जाती है
तेरा जीवन आग का दरिया है
तेरा जीवन शांत समुद्र का गहरा पानी है
तू ही नारी संकट जीवन यापन करती है
कहीं जग में तमाशा लगती है
कहीं पीडा पर अपनी आंखों का नीर
नदिया की तरह बहाती है
फिर भी मनुष्य अपनी नीचता से
बाज नहीं आता है
फिर भी तू कहीं अर्धांगिनी कहीं देवी कहलाती है

भादर अली इंदौर

स्पेशल थाली : फोकट वाली

'भावनाओं का भात,
कामनाओं की दाल,
तनाव का तड़का,
बाधाओं का बघार,
रस्मों का रायता,
ख्वाबों की खीर,
दर्द का दही-बड़ा,
सहानुभूति की सोंठ,
हसरतों का हलवा,
वादों का मुरब्बा,
दावों का अचार,
सोच का सलाद,
चाहत की चटनी,
प्यार का पापड़,
सलाह की सब्जी,
रिवाजों की रोटी,
पाखंड का पुलाव,
भरोसे का भुर्ता,
वो भी बिना भाव,
सब अनलिमिटेड,

यह है जीवन रूपी
ढाबे की स्पेशल थाली।
वो भी बिना पैसों की
फ्री-फोकट वाली।
तब तक खाते जाओ
जब तक अघा न जाओ।।
रोज़ चलने दो सिलसिला,
कोई भरोसा नहीं कि ये ऑफ़र
कल मिला या ना मिला।। '

-प्रणय प्रभात- श्योपुर (मप्र)

मिलन का अहसास दे गई*

तेरी मंद हसीं खुशबू हवा में बिखरी मोहब्बत का अहसास दे गई,
हवा में बिखरी तेरी गेसुओं की लट ठंडक का नया अहसास दे गई।

तसव्वुर में तुझको देखता हूँ तुम गुल सी बहारों में छाई रहती हो,
तेरी यादों का सिलसिला मेरी उल्फत के पलों का अहसास दे गई ।

मेरे ख्वाबों में तुम रहती सदा दिल में तिरछी नज़रों से उतर गई हो ,
गुलशन की वादियों में तन्हा ढूंढ़ता इश्क का नया अहसास दे गई

मोहब्बत की है मैंने तुझसे,
कोई गुनाह नहि होता मेरे दिलबर,
इतना न तड़पाओ तुम दिप मुझको तेरी हुस्न अदा का सहसास दे गई।

अब तुम मुझको मिल भी जाओ इशिका
तुम मेरे ख्वाबों की हुस्न मलिका हो,
तनहाई में कट रही मेरी जिंदगी *कौशल मिलन का अहसास दे गई।

- के, के, कौशल, इन्दौर, मध्यप्रदेश

ग़ज़ल

मंदिर की सदा भी है, मस्जिद की अज़ाँ भी है,
इस मुल्क की फ़िज़ाओं में मोहब्बत की जुबाँ भी है।

नफ़रत की सियासत से दिल टूट न जाएँ कहीं,
हर दिल में अमन का इक छोटा-सा जहाँ भी है।

मज़हब के फ़सानों से दीवार न खड़ी करना,
इंसान की क़ीमत में रब की भी निशाँ भी है।

गंगा की रवानी हो या जुमे की नमाज़ें हों,
हर रंग में इस मुल्क का प्यारा सा गुमाँ भी है।

मंदिर की घंटी हो या मस्जिद की अज़ाँ यारो,
दोनों में खुदा की ही रहमत का धुआँ भी है।

नफ़रत की हवाओं को रुख़ मोड़ना होगा अब,
इस खाक में अमन-ओ-मोहब्बत का समाँ भी है।

इंसाफ़ की राहों पर चलना ही इबादत है,
इस राह में हर दिल का सच्चा इम्तिहाँ भी है।

हिंदू हो कि मुस्लिम हो, सिख हो कि ईसाई हो,
हर दिल में मोहब्बत का रौशन सा मकाँ भी है।

मनजीत भावड़िया कहता है मुशायरे में आज,
नफ़रत के अँधेरों में उम्मीद का दिया भी है।

मज़हब से नहीं बढ़ती इंसान की पहचान,
इंसानियत में ही तो रब का आसमाँ भी है।

मनजीत सिंह कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

शक्ति उपासना पर्व

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मनता,हिंदू नव वर्ष त्यौहार ।
शक्ति उपासना पर्व पर,छलकता उत्साह अपार।।

नौ दिन की नवरात्रि में , होता भक्ति संचार।
व्रत, अनुष्ठान,पाठ से, मनता यह त्यौहार।।

नौ रूपों में मां देती दर्शन, दिखलाती चमत्कार।
भजन, कीर्तन और रतजगे से, सजता सांचा दरबार।।

नवमी को होता हवन पूजन, कन्या भोज की कतार।
नव रात्रि में श्रद्धा भाव से, शीश नवाते बारम्बार।।

शक्ति उपासना पर्व की, महिमा है अपरंपार।
चारों ओर गूंजती रहती, माता की जय जयकार।।

मोहन जोशी ' पीयूष ' इंदौर।

अधूरेपन का सौंदर्य

ठीक न होना भी ठीक है–
जैसे संध्या का धुंधलका
दिन और रात के बीच
एक अनकही प्रार्थना बनकर ठहर जाता है।
खो जाना भी ठीक है–
जैसे कोई पगडंडी
जंगल के भीतर जाकर
अपने ही निशान भूल जाती है,
और तभी खोज लेती है
एक अनदेखा आकाश।
भ्रमित होना भी ठीक है–
जैसे लहरें
किनारे की निश्चितता छोड़
समुद्र की अनंतता में
अपने अर्थ तलाशती हैं।
मनुष्य कोई सीधी रेखा नहीं,
वह वृत्त भी नहीं–
वह तो एक स्पंदन है,
जो हर क्षण बदलता है,
हर क्षण टूटता है,
हर क्षण नया जन्म लेता है।
हमने ओढ़ रखी है मुस्कानों की चादर,
भीतर के कंपन को छुपाने के लिए;
पर सच्चाई यह है–
कि हर हृदय में एक दरार होती है,
जहाँ से प्रकाश भी आता है
और पीड़ा भी।
मस्तिष्क की सूक्ष्म तरंगों में
रसायन अपना संगीत रचते हैं–
कभी डोपामिन का उजास,
कभी सेरोटोनिन की शांति,
तो कभी कॉर्टिसोल का तूफ़ान।
इसी उतार-चढ़ाव में
हम अपने होने का अर्थ लिखते हैं।
खो जाना–
विनाश नहीं,
एक मौन पुनर्निर्माण है;
जहाँ पुरानी पहचानें गिरती हैं,
और भीतर से
एक नया स्वर उगता है।
भ्रम–
अंधकार नहीं,
संभावनाओं का कुहासा है;
जहाँ हर दिशा
एक प्रश्न बनकर खड़ी रहती है,
और उत्तर
धीरे-धीरे जन्म लेते हैं।
जब तुम कहते हो–
'मैं ठीक नहीं हूँ ',
तभी तुम
सबसे अधिक सच्चे होते हो;
जब स्वीकारते हो–
'मैं खो गया हूँ ',
तभी तुम
खोज के सबसे निकट होते हो।
अधूरापन ही सृजन है–
पूर्णता तो ठहराव है;
टूटी हुई रेखाओं में ही
नए आकार जन्म लेते हैं।
जीवन कोई परिपूर्ण गीत नहीं,
वह तो एक अधूरा राग है,
जिसमें हर बेसुरा स्वर भी
अपनी जगह रखता है।
इसलिए,
जब धुंधलका घिरे,
जब मन डगमगाए,
जब राहें प्रश्न बन जाएँ–
तो ठहरो मत,
घबराओ मत,
बस महसूस करो–
कि यह भी जीवन है।
क्योंकि
कभी-कभी भटकाव ही
सबसे सटीक दिशा होता है,
और अधूरापन ही
सबसे सुंदर पूर्णता।

- डॉ. रामानुज पाठक, सतना (म. प्र.)